# अवध ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष – 24 अक्टूबर–दिसम्बर 2017

## अवधी बरवै पर विशेष

मूल्य - 25

# अवध-ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष - 24 अक्टूबर - दिसम्बर 2017



संरक्षण
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
जगदीश पीयूष

❑
सम्पादक
डॉ0 रामबहादुर मिश्र

❑
उप सम्पादक
प्रदीप तिवारी

❑
प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश 'जयन्त'

❑
सह सम्पादक
विष्णु कुमार शर्मा
विश्वम्भरनाथ अवस्थी
सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर'

❑
अक्षर संयोजन
मो. सलमान अंसारी



❑
एक प्रति - रु. 25
वार्षिक - रु. 100


## विषयानुक्रम


1. रामजोहारि - सम्पादकीय 2

2. चिट्ठी पत्री - डॉ0सुरंगमा यादव, मिथिलेश जायसवाल, डॉ0 विनय दास 3

3. लेख - अवधी बरवै काव्य धारा - डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' 5

4. लेख - बरवै काव्य परम्परा - डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी 17

5. नापतौल - 23
   1. लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र' रचनावली खण्ड -1 सतनजा
   2. लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र' रचनावली खण्ड - 2 एकांकी/नाटक
   3. प्याट के भीतर पेंड (बरवै) सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर'
   4. शिवचरितमानस - लेखक - डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी
   5. परम्परा के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक अवधी के मुस्लिम कवि - जितेन्द्र कुमार मिश्र
   6. चलौ गांवन की ओर - ओम प्रकाश 'जयन्त'

6. हाल चाल - 31
   1. डॉ0 रामबहादुर मिश्र को राष्ट्रपति पुरस्कार
   2. 'मित्र रचनावली का लोकार्पण समारोह
   3. राकेश पाण्डेय को पी-एच0डी0
   4. 'निशंक' जन्मशताब्दी समारोह

7. थाती - 34
   बाल लोक कथाएं
   अवधी संस्कार गीत


अवध ज्योति से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हैदरगढ़ होगा।


सम्पादकीय पत्र व्यवहार - कार्यालय अवध भारती संस्थान -
लोक कला मंच लोक सदन नरौली, बीजापुर (हैदरगढ़) बाराबंकी - 225124
लखनऊ कार्यालय : आर.एन. नागर कालोनी सुल्तानपुर रोड अर्जुनगंज, लखनऊ - 226002
मो. 9450063632, **e-mail :** awadjyoti@gmail.com, salmanansari7@gmail.com

**सम्पादकीय**

**रामजोहारि**

# अठई अनुसूची बनाम जन भाषा

हिन्दी भाषा आठ प्रादेशिक भाषा उप भाषा (बोली) से बनी है, ई हैं - उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, राजस्थान औ हरियाणा। हिन्दी की प्रादेशिक बोलिन मा राजस्थान मा राजस्थानी, उत्तराखंड मा गढ़वाली, कुमाऊँनी, नेपाली, पछारी, उ0प्रप0 मा ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, मेरठ के आस-पास कौरवी, पूरबी उ0प्र0, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ औ मध्य प्रदेश मा अवधी, बघेली छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली बोली जात है। यही मेर से हरियाणा मा बांगड़ बोली जात है। यही के साथे यक बात अउर जानब जरूरी है कि ई सब बोलिन मा उपबोली हैं, जइसन राजस्थानी बोली मा मेवाड़ी, जयपुरी, हरउती, मालवी, भोजपुरी बोली मा पश्चिमी भोजपुरी, दक्खिनी भोजपुरी औ सदानी अवधी बोली मा पूरबी, बैसवारी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, गांजरी औ केन्द्रीय अवधी। यही मेर सब बोलिन मा तमाम उपबोली हैं। भौगोलिक लिहाज से जउन बोली जतनी दूर होत है वहिका समझै बदे वतनिन कठिनाई होत है।

भाषा के लिहाज से सबै बोली भाषा मानी जइहैं, मुला जब भाषा कै मुद्दा आवत है तब सामाजिक मुद्दा बलवान होइ जात है। सबै बोलिन मा भाषिक दूरी होत भये उनके भाषा-भाषी अपना का हिन्दी कै अभिन्न अंग मानत हैं। यहै नाहीं मानक हिन्दी का ऊंचा दर्जा देत हैं। हकीकत तौ ई है कि बोली औ हिन्दी कै मानक रूप दुइनौ का उइ अपने जीवन मा अपनावत हैं। मानक हिन्दी औ बोली मा कउनौ विरोध नाहीं। यक बात अउर, जरूरी नहीं मानक हिन्दी बोलै वाले एक बोली न समझ पावैं मुला प्रादेशिक बोली बोलै वाले लोग मानक हिन्दी हर तिना से समझत हैं।

यक बात समझै वाली है कि उपनिवेशवाद के चलत भये बोली का गंवारु भाषा मानि लीनि गवा औ हिन्दी से इहकै दूरी बाढ़त गै। हिन्दी बोली के बजाय संस्कृत औ अंगरेजी से आपन शब्द सम्पदा बढ़ावै लाग। खास कइके अंगरेजी कै मुंह जोहै के परा। यहि कारन से हिन्दी मा बनतूपना आय गवा। अउर त अउर हिन्दी बोली बानी से विमुख होइके अपने गोड़े पर कुल्हरी मारत है। हिन्दी मा यही बदे ठहराव आय गवा। आम आदमी खातिर ऊ असहज बनत गै। साथेन साथ अंगरेजी की ओरिया मोह बाढ़त गवा। जरूरत है कि आदिकाल से जनजीवन कै बात जनभाषा मा कहै वाली बोलिन का हिन्दी मा अपनावा जाय। बोली-बानी के तालमेल से हिन्दी अंगरेजियत से बचे औ हिन्दी कै मौलिकता कायम रहे।

शिक्षा के माध्यम होय के नाते औ सामाजिक सरोकारन के नाते हिन्दी आपन असर बोली पर जनावत हैं। खास कइके फिल्मी दुनिया हिन्दी औ बोली मा एका कइके पूरी दुनिया मा हिन्दी कै झंडा फहरावत है। दुनिया मा हिन्दी मंदारिन भाषा के बाद दुसरे नम्बर पर है। कुछ भाषाविद औ विद्वान तौ इहका दुनिया कै नम्बर एक भाषा घोषित कइ चुके हैं। ऐसी हालत मा हिन्दी पट्टी के लोगन बदे जरूरी है कि अपनी - अपनी बोली बानी का अठईं अनुसूची मा सामिल करै कै जिद छोड़ि के हिन्दी कै झंडा पूरी दुनिया मा बुलंद करैं। हिन्दी का कमजोर करै की साजिश से वाकिफ होंय।

पत्रिका कै ई अंक 'अवधी बरवै' पर केन्द्रित है। बरवै अइसन छंद है जउन केवल अवधी भाषा मा रचा गवा। रहीम कवि 'बरवै नायिका भेद लिखिकै इहके मान बढ़ाइन। वहिके बाद तुलसी जइसन महाकवि बरवै रामायण लिखिन। बाद मा बरवै कै यक लम्बी परम्परा चली जउन आजौ कायम है। रहीम के यक बरवै से आपन बात खतम करब -

प्रेम प्रीति कै बिरवा चलेउ लगाय।
सींचन की सुधि लीजेहु, मुरझि न जाय।
सब पंचन का रामजोहारि ।

रामबहादुर मिसिर

## चिट्ठी पत्री

♦डॉ0 सुरंगमा यादव, असि0 प्रो0 हिन्दी, महामाया राजकीय महाविद्यालय महोना, लखनऊ

आठवीं अनुसूची पर केन्द्रित अवध-ज्योति का विशेषांक मिला। बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सार्थक अंक है जिसमें हिन्दी की बोलियों की ताकत और हिन्दी के प्रति हो रहे षडयंत्र का खुलासा किया गया है।

वस्तुतः हिन्दी भाषा विभिन्न उपभाषाओं और बोलियों का समुच्चय व संश्लिष्ट रूप है। इसके अन्तर्गत पांच उपभाषाएं तथा कुछ समय पूर्व तक मुख्य रूप से अट्ठारह बोलियां समाहित थी, जिनकी संख्या आज सत्रह रह गयी है। मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करके अलग भाषा का दर्जा दे दिया गया है। हिन्दी की इन्हीं बोलियों में से एक खड़ी बोली को मानकीकृत कर बोलियों के इस समूह का मुखिया खड़ी बोली को बनाया गया है। लेकिन ऐसा होने से न हिन्दी अपनी बोलियों से पृथक हो जाती है और न ही बोलियों का महत्व कम हो जाता है। वास्तव में बोलियां ही तो हिन्दी की शक्ति हैं। उनके बोलने वालों की संख्या और साहित्य के दम पर ही तो हिन्दी बहुसंख्यक जनों की समृद्ध भाषा के रूप में गौरवान्वित है। हिन्दी और उसकी बोलियां एक सूत्र में बंधे हुए लकड़ी के उस गट्ठर के समान हैं जो - एक-दूसरे को बल प्रदान करती हैं। जब-जब उसमें से कोई लकड़ी खींची जाएगी तब-तब पकड़ भी ढीली होगी और शक्ति भी क्षीण होती जाएगी, गटठर की भी और पृथक की गयी लकड़ी की भी।

इधर संविधान की आठवीं अनुसूची में हिन्दी की बोलियों को शामिल कराने की होड़ सी चल पड़ी है। पहले मैथिली हिन्दी परिवार से पृथक हुई और अब भोजपुरी और राजस्थानी को भी अलग करने का प्रयास हो रहा है। ये या तो कोई षडयन्त्र है या इसके दूरगामी परिणामों पर विचार नहीं किया जा रहा है। आज जो मांग हिन्दी की इन बालियों के लिए उठ रही है, कल अन्य बोलियों के लिए भी उठने लगेगी। जिसका परिणाम ये होगा कि जनगणना के समय इन भाषाओं को बोलने वालों की गणना हिन्दी से पृथक की जायेगी और आंकड़ों में हिन्दी बोलने वालों की संख्या घटती जायेगी। हिन्दी का विस्तृत क्षेत्र और साहित्य संकुचित हो जायेगा। हिन्दी के कवि भी अलग-अलग क्षेत्रों में बंट जायेंगे। इसी आधार पर हम संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को अधिकारिक भाषा के रूप में सम्मिलित करने की माग कर रहे है। जब हमारे पास संख्या बल ही नहीं होगा तो हमारी मांग में क्या दम रह जायेगा। भारत विभाजन का दंश हम झेल ही रहे हैं। यदि हम नहीं चेते तो भाषा विभाजन की पीड़ा भी हमें क्षेत्रीय, प्रादेशिक राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों पर कई रूपों में झेलनी होगी। कितनी बड़ी विडम्बना है कि एक विदेशी भाषा के कारण इतने विशाल और गौरवशाली देश में राष्ट्रभाषा के पद पर कोई भाषा प्रतिष्ठित नहीं है और हम सबसे प्रबल दावेदार को ही कमजोर बना रहे हैं। सर्वप्रथम हिन्दी को आठवीं अनुसूची से पृथक करके 'राष्ट्रभाषा' का गौरव संवैधानिक रूप से प्रदान किया जाए। तत्पश्चात् इस सूची में कितनी ही क्षेत्रीय भाषाएं और बोलियां सम्मिलित हों देश के हिन्दी प्रेमियों को इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। भाषायी संकीर्णताओं से निकलकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कराने के लिए एकजुट प्रयास की महती आवश्यकता है। अन्यथा हम नूर लखनवी के शब्दों में ''इतने हिस्सों में बंट गया हूं मैं, मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं।'' कह कर हाथ मलते रह जायेंगे।

♦मिथिलेश जायसवाल, भज्जापुरवा, राजापुर कला नानपारा, बहराइच - 271865, मो. 9532184793

2. अवधी जगत केर सबसे लोकप्रिय औ चर्चित पत्रिका अवध ज्योति अंक अप्रैल - जून 2017 पढ़य के शुभ अवसर मिला। जू हरेर होय गवा ई पत्रिका मा हमका बहुत बढ़िया जानकारी मिली, जिमा यात्रा वृत्तान्त बहुतय सुखद रही, यात्रा वृत्तान्त मा जहाँ भारत नेपाल अवधी परिषद द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अवधी जागरण यात्रा दूसरे चरण के बारे मा बिस्तार से जानय के अवसर मिला, जिमा भारत के अयोध्या बाराबंकी, लखनऊ, रायबरेली, चित्रकूट, प्रयाग, सुलतानपुर, अमेठी और नेपाल के बांके काठमांडू कपिलवस्तु आदि के साहित्य और साहित्यिक स्थल के बारे मा जानकारी मिली, ई अवधी जागरण यात्रा के बारे मा आज भी जगह-जगह चर्चा और प्रशंसा होय रही है, ई यात्रा से जहाँ अवधी साहित्य के विस्तार हुआ है, वहीं पर ई यात्रा से बहुत से नवसिखिया साहित्यकार अवधी लेखन से जुड़ि गये हैं। और हां ई पत्रिका मा एक खास मुद्दा रहा आठवीं अनुसूची पर पंचायत ई विषय पर बहुत बड़े-बड़े विद्यूवान लोगन के लेख पढ़य